

देवमंसत 10,86, 1. यथा त्वदन्यं पुरुषं न सा मंस्यति कर्हिचित् MBh. 3, 2092. मंस्यते मां यथा नृपम् 4, 32. तं मम्महे महेक्षानम् Verz. d. Oxf. H. 69, a, 1. न मंस्यते जनार्दनम् Vop. 25, 12. निकटस्थं गरीयासमपि लोकि न मंस्यते Spr. 1371. मन्यामहे मलयमेव 681. ऋषयश्चैव देवाश्च सत्यमेव हि मेनिरे 3815. मन्यधे पत्युरस्यैव चेच्छ्रियम् Rāga-Tar. 4, 311. एवमेव न-
रव्याधः परलीढं (so die ed. Bomb.) न मन्यते so v. a. verschmähnen R. 2, 61, 16. शठस्तु समयं प्राप्य नोपकारं हि मन्यते achtet für Nichts Spr. 5051. — 6) im Sinne haben, wollen, wünschen, das Absehen haben auf: यममे त्वं चिन्मन्यसे रयिं तमा भरं welchen du selbst willst RV. 5, 20, 1. 39, 2. 10, 21, 4. मन्ये वां ज्ञातवैदसा यजथ्ये 7, 2, 7. नहि भ्रातृभ्याम्योर्द्वयो म-
नसा मत्तवा उं 4, 8. उत मन्ये पितुरद्भुतो मनो कवीमभिः 1, 139, 2. देवमू-
तये अमन्महि 5, 22, 3. नू चिन्तु ते मन्यमानस्य द्रुमोदंश्च त्वत्ति महिमानम्
wenn du es darauf absiehest 7, 22, 8. अदेवेन मनसा यो रिष्यति शसा-
मुद्यौ मन्यमानो जिघीसति eum vindex acerrimus animadvertens interi-
mit 2, 23, 12. (अश्वाङ्) यानन्यान्मन्यसे राजन्ब्रूहि तान्योजयामि ते MBh. 3, 2788. यौवराज्यमन्यत R. 2, 1, 26. mit gen. begehren: सुवितस्य मनामहे
(वनामहे SV.) RV. 9, 41, 2. — 7) gedenken (im Gebet u. s. w.), erwäh-
nen, meminisse, commemorare; erdenken, ersinnen: कस्य नूनं मनामहे
देवस्य नाम RV. 4, 24, 1. 8, 11, 5. अमन्महि मरुतां नाम भद्रम् 4, 39, 4. अग्ने
स्तोमम् 5, 13, 2. रातकव्यस्य मुष्टितं स्तोमैर्मनामहे 66, 3. 10, 35, 8. सारं 8,
29, 10. 79, 3. वृत्रेषु शूरा मंसत उयाः 7, 34, 3. 66, 12. मरुतामघा मेहे
दिवि त्नाम च मम्महे 5, 52, 3. किं स्विद्व्यामि किमु नू मनीष्ये 6, 9, 6. 10,
97, 1. 52, 1. तद्व्य वाचः प्रथमं मसीय 53, 4. धियम् VS. 4, 11. mit gen.:
यज यज्ञस्य मन्वते मर्त्यसः RV. 10, 2, 5. 12, 6. अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य AV. 4,
23, 1. — 8) Etwas (acc. gen. in der älteren Sprache) wahrnehmen, inne-
werden, erkennen; wissen, begreifen: पुरुत्रा ते मनुतां विष्टितं जगत् RV.
6, 47, 29. 1, 30, 21. इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयो च यत्। पृथगुत्पद्यमानां
मत्वा धीरो न शोचति II Kāthop. 6, 6. पृथिवी रत्नसंपूर्णा नालमेक-
स्य तत्सर्वमिति मत्वा zur Einsicht gelangen Spr. 1820. दोषान्सर्वान् म-
त्वा erkennen 2672. वर्षेष्वेवागतं विप्रं स हि मत्वा erfahren R. 1, 9, 66 (65
Gorr.). Hariv. 6944. मत्वा (= ज्ञात्वा Schol.) देवं धनपतिसर्वं यत्र सात्ताद-
सत्तम् wissend, dass Megh. 72. तड ह न मेने गार्ग्यः das wusste G. nicht
Çat. Br. 14, 5, 1. 6, 9, 28. पश्यन् शृण्वन् मन्वानः 4, 3, 17. 5, 4, 15. 7,
4, 28. Khand. Up. 7, 18. 8, 12, 5. Taitt. Up. 2, 7. Cit. in Vedāntas. (Allah.) No.
111. — 9) zudenken so v. a. schenken, verehren: यः सकृन् सकृन्नापां कन्या
ह्मविभूषिताः — ब्राह्मणेभ्यो ह्मन्यत MBh. 7, 2250. 2265. 2317. — 10)
partic. मत a) erscheinend als, geltend —, angesehen werdend für: स
वै स्पर्शगुणो मतः M. 1, 76. इन्द्रियं कर्णं मतम् Bhāṣarp. 57. इमे ऽनिता
मताः Kār. 7 aus Kic. zu P. 7, 2, 10. Cit. beim Schol. zu Çāk. 98. मग-
धाः कीकटा मताः Trik. 2, 1, 11. 8, 20. 3, 1, 23. 3, 194. अङ्गारितं पलाशानां
कलिकोदमने मतम् 2, 2. 3, 293. एवं योगो यमाद्यङ्गैरष्टभिः स मतो ऽष्टधा
H. 85. Sāh. D. 8. Vop. 5, 7, 8, 103. यदि सौधपतिर्भद्रे नियोज्यो मतस्तव
dir erscheint MBh. 5, 6084. यज्ञगोप्ता स मे मतः R. 1, 70, 4. अहिंस्यस्तव
चेन्मतो ऽहम् Ragh. 2, 57. 14, 40. Kār. zu P. 5, 2, 45. तस्मान्मे नैव दोषो
मतस्तव MBh. 13, 40. न चान्यदत्रैषधमस्ति मे मतम् so v. a. nach mei-
ner Meinung giebt es nicht 4, 380. mit श्रेणि u. s. w. (als praed.) com-
ponirt gaṇa कृतादि zu P. 2, 1, 59. davor ein fem.-suff. verkürzt 6, 3, 43.
figg. ब्राह्मणमता Schol. बहु^० hoch gehalten, geachtet; s. u. बहु Belege.

— b) gut befunden, gebilligt: मतं मे ऽमुकपुत्रस्य पदत्रोपरि लेखितम् Jāṇ. 2, 86. स्थाप्यो नृपते पदे R. 2, 52, 31. Kām. Nitīs. 4, 67. Spr. 1984. — c)
geachtet, geehrt, gern gesehen von (gen.) P. 3, 2, 188. राज्ञाम् Schol. 2, 2,
12, Sch. 3, 67, Sch. Ragh. 2, 16. 8, 8. Kām. Nitīs. 14, 39. Kir. 5, 27. भुवना-
धिपत्यभोगादयः कृपणलोकमता भवति hoch angeschlagen Spr. 1012. =
संमत MED. I. 43. = संमित (wohl संमत) und geschätzt H. an. 2, 185. — d)
gewollt, beabsichtigt: आसितं भाषितं चैव मतं यच्चाप्यनुष्ठितम् R. 1, 3, 4.
दीयतामस्य यन्मतम् 63, 16. — e) begriffen, verstanden, erkannt; = ज्ञात
MED. KENOP. 12. Vgl. मतात्. — f) n. a) Meinung, Ansicht Spr. 3820.
Kām. Nitīs. 1, 8, 3, 25. VARĀH. BRH. S. 21, 5. वसिष्ठस्य मते R. 1, 72, 9. स-
गरस्य मते स्थितः 40, 6. 73, 32. केषांचित् मते Rāga-Tar. 4, 369. Siddh. K.
zu P. 1, 2, 6. Mār. P. 18, 33. सतां मतमतिक्रम्य यो ऽसतां वर्तते मते Rath
Spr. 3117. मतानि मन्त्रिणाम् Kām. Nitīs. 11, 75. MBh. 1, 6168. ये मे मत-
मिदं नित्यमनुतिष्ठति मानवाः Lehre Bhāg. 3, 31. 18, 6. LA. (II) 90, 14. 91,
5. Pāṇāt. 253, 12. वैखानसमते स्थितः M. 6, 21. — β) Gutheissung, Bil-
ligung, Einwilligung AK. 3, 5, 12. H. 1540. — γ) Absicht H. 1383. MBh.
3, 1788. 2759. Bhāg. P. 1, 7, 32. — Vgl. अमत (अमत Kām. Nitīs. 13, 67
fehlerhaft für अभृत; vgl. 75). — 11) partic. मनिता gekannt, verstanden AK.
3, 2, 57. H. 1496. Was bedeutet aber diese Form Pāṇāt. 3, 12, 10? — Vgl. सा.

— caus. मानयति (wohl denom. von मान Ehre) ehren, Ehre erzeugen
(mit acc.) Dhātup. 34, 36. मानयामास पौरजानपदान् MBh. 1, 4467. 3, 922.
2424. 5, 5806. 13, 1878. 2492. 4712. 6769. Hariv. 6608. R. 1, 38, 8. 41, 16.
R. Gorr. 2, 4, 6. 4, 8, 58. 5, 7, 48. Kumāras. 6, 15. Spr. 1031. 3484. कृति
मानयति दुर्जनः 3315. Kathās. 44, 126. 50, 60. Bhāṭ. 19, 24. Inschr. in
Journ. of the Am. Or. S. 6, 539, 6. वस्त्रैरभरणैर्भूय मर्कटैस्तममानयत्
Kathās. 38, 31. 49, 204. 66, 133. मानयान MBh. 3, 13111. मानयस्व 5, 7313.
मानयत्तश्च ते वाक्यम् R. 1, 14, 15. मायाम् — उहू मानयानः Bhāg. P. 3, 1, 16.
बहु मानयन् 5, 17. 15, 19. बहु मानयेथाः Mār. P. 25, 15. साधु मानयेत्
Bhāg. P. 7, 7, 32. मान्यमान MBh. 13, 2034. मानित 4, 94. 13, 4712.
R. 1, 17, 17. 5, 7, 55. 6, 107, 5. Ragh. 2, 64. Bhāg. P. 1, 4, 28. Mār. P. 70,
17. अ^० MBh. 4, 94. Kām. Nitīs. 13, 67. 74. आचार्यता मानिता MBh. 5,
7146. वाक्य 1, 3526. मनागमानितगुण Spr. 1885. मानित n. Ehrenerwei-
sung: मानिते तव राजेन्द्र सर्वेषां मानितं भवेत् Hariv. 6210 (fehlt in der
neueren Ausg.) — मानयते स्तम्भे Dhātup. 33, 35. गर्वके Vop. — Vgl. मा-
नन, माननीय, मान्य.

— desid. मीमांसते Dhātup. 23, 3. P. 3, 1, 6. überlegen, bedenken, er-
wägen, prüfen Vop. 8, 103. 119. Siddh. K. zu P. 3, 1, 6. पश्यत्यस्याश्रितं
पृथिव्यां पृथङ्गैर्बहुधा मीमांसमानाः AV. 9, 1, 3. तां देवा अमीमांसत व-
शेषाश्मवशेति 12, 4, 42. TS. 7, 5, 7, 4. Kāth. 36, 14. 37, 1. गव्यं मीमांसमा-
नाः पृच्छति सति तत्रोपाश्रितं इति Ait. Br. 4, 27. मीमांसो चक्रुः को न आत्मा
किं ब्रह्मेति Khand. Up. 5, 11, 1. मीमांसितोभयम् M. 4, 224 (= MBh. 12,
9453). Çāṅk. zu Brh. Âr. Up. S. 319. Bhāg. P. 7, 8, 20. act.: इति मीमांस-
तस्तस्य ब्रह्मणः सह सूनुभिः 3, 13, 23. pass. मीमांस्यते Çāṅk. zu Brh. Âr.
Up. S. 318. एतद्विदितं मीमांसितम् Çat. Br. 14, 4, 2, 29. अमीमांसितकर्म-
णाम् Bhāg. P. 6, 5, 37. in Frage stellen, bezweifeln: तत्सर्वमेव पुत्रस्ते न
मीमांसते कर्हिचित् MBh. 1, 8878. mit loc. der Sache, in Beziehung auf
welche die Befähigung oder Zulassung einer Person fraglich ist: ये पात्रे
वा तत्त्वे वा मीमांसेरन् TS. 6, 2, 4. Kāth. 25, 3. Pāṇāt. Br. 23, 4, 2. ब्रा-